डाक पंजीयन क्र. आई.डी.सी./म.प्र./892/ 2015-17
पत्र पंजीयक क्र. : म.प्र. 15059

# संस्कार सागर

• वर्ष : 18 • अंक : 208
• अगस्त 2016
• मूल्य : 15 रु.

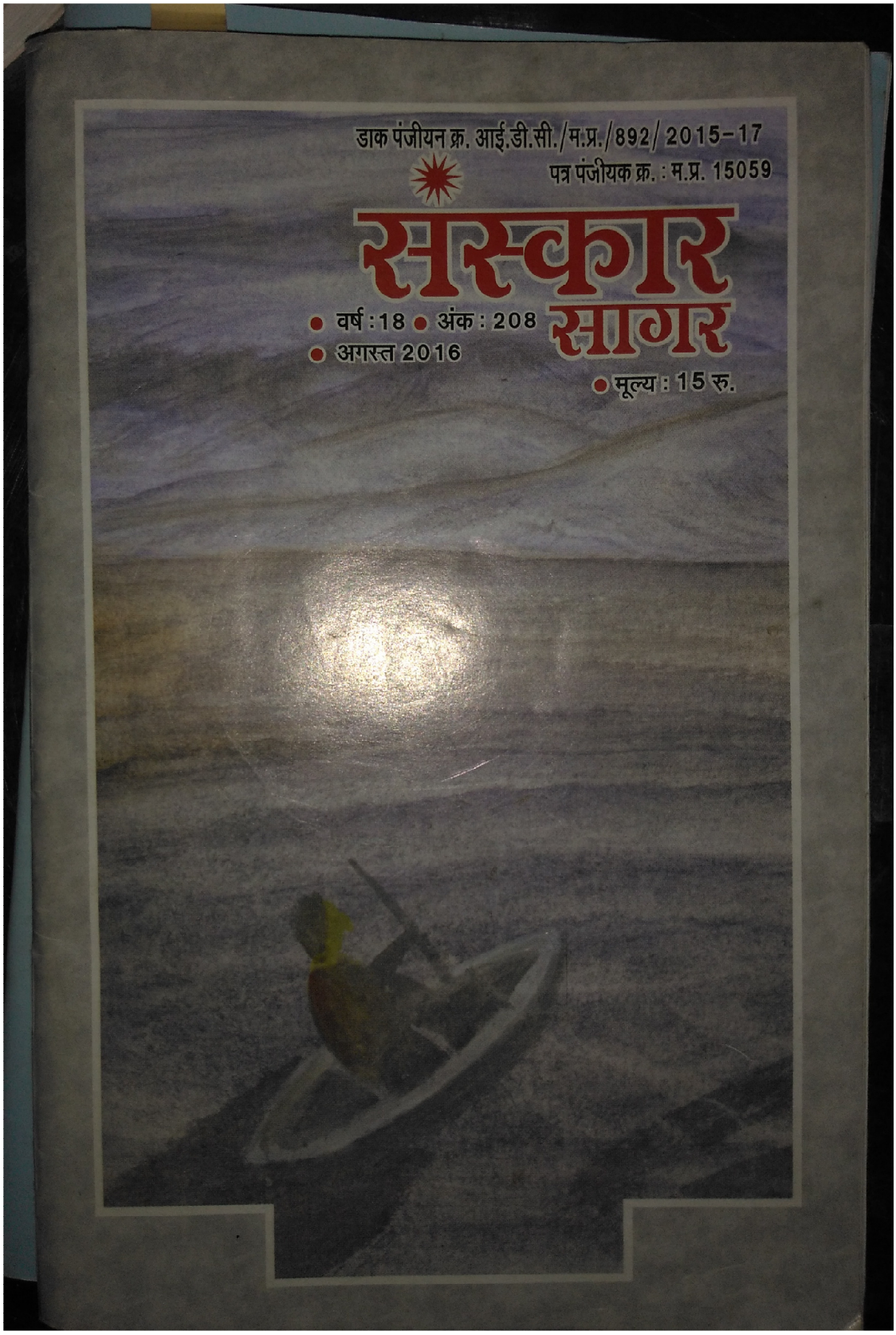

# नवागढ़ में मिले हजारों वर्ष पुरानी प्राचीन शैलाश्रय एवं शिल्प

• राजीवकुमार जैन, शोधार्थी •

नवागढ़ प्राचीन नंदपुर अतिशय क्षेत्र में निरंतर ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त हो रहे हैं। प्राचीन स्थानीय शैलाश्रय की खोज हेतु गठित दल दिनांक 23 जून 2016 को ब्र. जयकुमार निशांत भैयाजी, पूर्व सरपंज रामनारायण यादव, रामनाथ गुर्जर एवं अन्य व्यक्तियों के साथ फाईटोन की पहाड़ी में खोज करने मैं भी गया। 3-4 घंटे की मेहनत के पश्चात् दो शैलाश्रय प्राप्त हुये हैं। एक शैलाश्रय में मिट्टी भरी हुई थी जिसमें पड़े मल से किसी जंगली जानवर का निवास होना प्रतीत होता है। वहीं दूसरी शैलाश्रय का मुख एक विशाल चट्टान से बंद था दोनों शैलाश्रय को खोलने पर कुछ कलाशिल्प प्राप्त हुए हैं।

यह शैलाश्रय सहस्त्रों वर्ष से साधकों की साधना स्थली रहें हैं। फाईटोनं पहाड़ी के निकट विशेष कलापूर्ण देवालय रहा होगा जिसके अवशेष आज प्राप्त हो रहे हैं। प्राप्त शिल्पखण्डों में एक शीर्ष सामान्य मुकुटधारी राज्याधिकारी का प्रतीत होता है। द्वितीय शीर्ष की भाव भंगिमा, सौम्यता, स्मृत होष्ठ, विशाल नयन, दीर्घ मस्तक पर शोभायमान विशेष मुकुट एवं कुण्डल से यह किसी राजपुत्र की जीवन्त प्रतिमा प्रतीत होती है।

शैलाश्रय से प्राप्त कलात्स हस्त की तर्जनी, अंगुली एवं अंगूठे के मध्य मुकुलित कमल दण्ड एवं हाथ के नीचे सुंदर मुखाकृत से यह प्रतीत होता है कि किसी खड़े हुए महापुरुष का दाहिना हाथ है जिसके पार्श्व में राजपुरुष की खड़ी आकृति रही होगी। हाथ की कला एवं कोमलता को देखते हुए प्रतीत होता है कि यह शिल्प अत्यन्त भव्य, मनोज्ञ रहा होगा। अन्य पहाड़ी से प्राप्त हजारों वर्ष प्राचीन शिल्प किसी राजपुरुष या दानवीर श्रेष्ठी का है जो देवगढ़ में स्थित कलाशिषअप के समान है, इस पर अंकित अभिलेख अन्वेषण का विषय है।